आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editorbabuji@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
गंगाधर घुमाडे ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव ◆ मुकुंद कुलकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य ◆गोपाल सत्पुरे

सभी छायाचित्र - सदाविजय आर्य, डॉ.शारदा जाधव

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	अ, आ के बाद इ और भी हम ज़रूर सीखे	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
आंतर भारती - २	बसव वचन	९
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - १	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	१२
कथा भारती - १	संघर्ष और सफलता की गाथा बराक ओबामा	१३
बाल भारती - २	भावी नेता बालक	१६
काव्य भारती - २	आठ तांका-कविताएं	१७
समाचार भारती-१	१० मई, गोवा में हुआ कार्यक्रम	२०
समाचार भारती-२	आन्तर भारती ट्रस्ट विश्वस्त मंडल एवं राष्ट्रीय कार्यवाही समिति संयुक्त बैठक	२५
समाचार भारती-३	अंतर्राष्ट्रीय युवा शांति एवं सद्भावना शिविर कोटा राज.	३२
समाचार भारती-४	प्राकृतिक जीवनशैली आवासीय शिविर	३४

संपादकीय...

अ, आ के बाद इ और भी हम ज़रुर सीखे

दुनिया में इन्सान ने अस्त्र निर्माण सीखा और आतंकी भी सीखी, मगर ऐसा प्रतीत होता है कि वह इन्सानियत और ईमानदारी को बचाने से वंचित रह गया है. दूसरे शब्दों में अतिवाद और आयुध प्रयोग से दुनिया में इन्सान को जितना ख़तरा है, उससे कई गुणा अधिक खतरा इन्सान की बेईमानी से है. मानवीय आचरण का एक पैमाना प्रत्येक धर्म में, प्रत्येक समाज में पूर्व निर्धारित है. मगर धर्माडंबर की प्रवृत्ति से इन्सान की ईमानदारी भी महज दिखावा बनती जा रही है. इन्सानियत का तभी सार्थक अस्तित्व संभव है जबकि इन्सान में ईमानदारी हो.

शक्ति के अजस्र स्रोत के रूप में सूचना का सदियों से अहम महत्व है. के खतरे से बचने के लिए जहाँ सूचना व खुफिया-तंत्र को मजबूत बनाने की प्रक्रिया को एक व्यावहारिक पहल के रूप में कई देश अपना चुके हैं. इसी क्रम में प्रौद्योगिकी के विकास के आलोक में अमरीका जैसे देश की खुफिया अभिकरण द्वारा अत्याधिक सेबर सुविधाओं के माध्यम से समूची दुनिया के इंटर्नेट व मोबाइल संचार-स्रोतों की छान-बीन करना किसी तरह से आश्चर्य की घटना नहीं है. मगर इस तथ्य का पर्दाफाश करके स्वयं घोषित स्वेच्छा व अभिव्यक्ति अधिकार-प्रेमी युवक ने जहाँ अमरीकी कानूनी व्यवस्था से ख़तरा मोल लिया है, वहीं वैश्विक स्तर पर नागरिक अधिकारों के सचेतकों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष समर्थन भी हासिल कर लिया है. अमरीकी सैबर आक्रमण की खबरों से जहाँ कई देश चौंक गए हैं वहीं भारत भी घबराते हुए इसे उसकी अपनी सार्वभौमिकता के समक्ष सवाल के रूप में मानते हुए अपना रोष भी किसी हद तक जता चुका है. मगर दूसरी ओर, वैसे भारत में आतंकी हमलों से बचने के लिए सूचनाओं और संचार स्रोतों के इसी तरह छान-बीन के प्रयास भी शुरु हो गए हैं. यह कोई विडंबना नहीं, सूचनातंत्र के विकसित युग की यह जहरीली सच्चाई है कि एक दूसरों की सूचनाओं से तीसरा फायदा उठाने की चाह के रूप में यह बेईमानी इस युग में फैलती जा रही है. संवैधानिक प्रावधानों के तहत न्यायिक व्यवस् था की दखल के बगैर अभिव्यक्ति व गोपनीयता के अधिकारों से नागरिकां को वंचित रखना जनतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है. मगर इन्सानों में बढ़ती बेईमानी की वजह

से शांति व सुरक्षा व्यवस्था के लिए जिम्मेदार अभिकरणों के लिए आज इसके बिना कोई चारा नहीं है. ऐसी सूचनाओं का इन्सानियत के हित में हो तो कोई बात नहीं, मगर किसी भी रूप में यह इन्सानियत के लिए ख़तरा भी हो सकता है. सैबर लड़ाइयों की विभीषिका का यह आरंभ बिंदू है.

वैसे तो पारदर्शी शासन व्यवस्था में सूचनाआं का बड़ा महत्व है. इसी दृष्टी से भारत में सूचना अधिकार अधिनियम के तहत सार्वजनक स्रोतों से वांछित सूचनाएँ प्राप्त करके का अधिकार नागरिकों को प्राप्त है. इस बीच राजनीतिक पार्टियों को इस अधिनियम के तहत अपेक्षित सूचनाएं नागरिकों को उपलब्ध कराने की मांग होने पर लगभग सभी राजनीतिक पार्टियाँ अपनी असहमति जता चुकी हैं. राजनीतिक पार्टियों की ईमानदारी पारदर्शी हो, इसलिए सूचना लेने के हक़ से आम आदमी को वंचित रखने से पार्टियों की इन घोषणाओं पर ही सवालिया निशान बन जाता है कि उनकी पार्टियाँ जनहित में ही कार्य कर रही हैं ? विकसित सूचना प्रौद्योगिकी के साथ हमारी धारणा और व्यवहारां में इन्सानियत और ईमानदारी को बचाने की चेष्टा होती तो बढ़ते सूचना-सागरों से दुनिया को कोई खतरा नहीं है, अन्यथा इन्हीं सूचना भंडारों से कल जाकर जो प्रलय मचेगा वह इन्सानियत के लिए खतरनाक साबित हो जाएगा.

जहाँ तक मैं मानता हूँ इन्सान का सार्थक अस्तत्व इसी बात में निहित है कि वह इन्सानियत और ईमानदारी को समझे और अपनाएं. इस बीच आंतर भारती के राष्ट्रीय संगठक श्री हर्षद रावल जी ने लोकनाद में शांति की अभिव्यक्ति के लिए अभियान - 'इन्सान हैं हम' के प्रयासों के तहत 'सबसे खतरनाक' शीर्षक से शहीद कवि अवतार सिंह पाश की एक कविता मुझे भेजी थी, उसी कविता की पंक्तियाँ इन्सानियत और ईमानदारी संबंधी चिंतन के इस पल में भी जरूर प्रासंगिक लग रही हैं. अतः उन्हें यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ -

मेहनत की लूट सबसे ख़तरनाक नहीं होती.
पुलिस की मार सबसे ख़तरनाक नहीं होती.
गद्दारी - लोभ की मुट्ठी सबसे ख़तरनाक नहीं होती.
बैठे बिठाये पकड़े जाना ख़राब तो है,
भयानक मौन में जकड़े जाना ख़राब तो है,
पर सबसे ख़तरनाक नहीं होता.
सबसे ख़तरनाक होता है.

मुर्दा समान शांति से सो जाना.
न होना तड़प का और सब कुछ सह जाना.
घर से निकलना काम पर और काम से चुपचाप घर आ जाना.
सबसे ख़तरनाक वो दिशा है,
जिसमें आत्मा का सूरज डूब जाये.
सबसे ख़तरनाक होता है,
हमारे सपनों का मर जाना.

इस बीच देवभूमि के रूप में ख्यात उत्तरखंड के तीर्थाटन के लिए आकर्षक कई इलाकों में भीषण जल प्रलय की संख्या में श्रद्धालू भूस्थापित हो चुके हैं, कइयों की जाने हवा में मिल चुकी हैं. कई सरकारों की कई घोषणाओं और प्रयासों के बीच तत्पर, कर्मनिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा पीड़ितों को बचाने के प्रयास निरंतर जारी है. इन प्रयासों में कई तरह की उपेक्षाओं के संबंध में, कई तरह की अव्यवस्थाओं की आलोचना आए दिन अखबारों में प्रकाशित हो रही हैं और चौबीस घंटे टीवी की खबरों के माध्यम से भी बड़ी आलोचना की जा रही है. ऐसी स्थिति में बचाव व राहत के लिए पूरी ईमानदारी से हम तमाम आधुनिक तंत्रों का प्रयोग करते हुए सफल हो जाए, यही आशा है. पर्यावरणविदों और पर्यावरण प्रेमियों द्वारा समय-समय पर दी गई चेतावनी और जताई गई चिंताओं की ओर पूरी ईमानदारी से ध्यान देकर प्रकृति के साथ छेड़-छाड़ की चेष्टाओं पर रोक लगा देते तो शायद ऐसी विभिषिका से बचने की संभावना थी. खैर, ईमानदारी से इन्सानियत को बचान की अपार शक्ति हमें मिलती रहे, इसके लिए हमें अपने गुण-गण को सटीक करने के प्रयासों में पूरी निष्ठा के साथ तुरंत प्रवृत्त होने की ज़रूरत है. उत्तरखंड के जलप्रलय में पीड़ित जनता के शोक को दूर करने में पूरी कर्मनिष्ठा से लगे हुए असंख्य सैनिक बलों, स्वैच्छिक सेवियों के साथ आंतर भारती के कार्यकर्ता भी अपने स्तर पर ज़रूर भागीदारी करेंगे, ऐसी आशा है. बचाव कार्यों में लगे कार्यकर्ताओं को अपनी जिम्मेदारी निभाते समय मौसम से उत्पन्न खतरें में अपनी जान तक देनी पड़ी है. उत्तराखंड की पहाड़ियों में जल-प्रलय की इस विभीषिका में स्वर्गस्थ तमाम आत्माओं को असीम शांति की प्राप्ति के लिए 'आंतर भारती' की हार्दिक श्रद्धांजलि.

२८ जुलाई को विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस के अवसर की शुभकामनाओं तथा प्रकृति संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता व निष्ठापूर्वक आगे बढ़ने के अनुरोध सहित...

- डॉ.सी.जय शंकर बाबु

आंतर भारती - ९

तुकाम्हणे

(मराठी)

पुण्य परउपकार पाप ते परपीडा

पुण्य परउपकार पाप ते परपीडा । आणिक नाहीं जोडा दुजा यासी ॥धृ॥
सत्य तो चि धर्म असत्य तें कर्म । आणीक हें वर्म नाहीं दुजं ॥१॥
गति ते चि मुखीं नामाचें स्मरण । अधोगति जाण विन्मुखता ॥२॥
संतांचा संग तोचि स्वर्गवास । नर्क तो उदास अनर्गळा ॥३॥
तुका म्हणे उघडें आहे हित घात । जयाचें उचित करा तैसें ॥४॥

हिन्दी भावानुवाद :

'परोपकर : पुण्याय पापाय परपीडनम्'

कौन पुण्य उपकार से बढकर, कौन पाप पीड़ा से बढ़कर ।
इससे बढ़कर तुलना नहीं है, पाप-पुण्य की परख यही है ॥१॥
सत्य ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है, असत्य भाषण ही अधर्म है ।
इससे बढ़कर तुलना नहीं है, धर्म-अधर्म की परख यही है ॥२॥
गति है यही, यही सद्गति है, मुख में राम-नाम की रट है ।
इससे उलटी अधोगति है, गति-सद्गति की परख यही है ॥३॥
संतों की संगत में रहना, संतसंग की महिमा यह है ॥४॥
तुका कहे हित की कह दी है, हित अनहित बतला दी है ।
जैसा भावे, जिसे, वह करे, हित अनहित की राह पर चले ॥५॥

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Piety is Service to others, sin is hurting
Punya paraupakaara paapa te parapeedaa

Piety is service of others, while sin is hurting others.
There is no other oinion on this.
Truth is Dharma or Religion,
and Untruth is Karma or addition to past sins.
There is no truth other than this

Repetition of the sacred Name ensures progres.
Not doing so leads to hell.
The company of Saints is heaven on earth.
Speaking ill of Saint is itself the road to hell.

Says TUKA, paths to heaven and hell are open to all.
People should choose the right path.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

बसव वचन

मूल कन्नड वचन -

कंड भक्तरिगे कै मुगियवातने भक्त
मृदु वचनवे सकल जपंगळय्य
मृदु वचनवे सकल तपंगळय्य
सदु विनयवे सदाशिवनोलु मेथय्य
कुडल संगय्य नंतल्ल दोल्लनय्य

हिंदी काव्यानुवाद :-

भक्तों को देख हाथ जोड़ वंदन करनेवाला भक्त है
उसकी मृदुवाणी ही सकल जप हैं
उसकी मृदुवाणी ही सकल तप हैं
सद्विनयवृत्ति सदाशिव के कृपा का कारण है
इस प्रकार जो आचरण नहीं करते
उन पर कुडलसंगय्य कृपा नहीं करते !

भाष्य -

शरणों का अनन्य भाव विनम्रता है. जो भक्तों को देखकर प्रसन्न होते हैं. आनंदित होते हैं. उन्हें देख हाथ जोड़कर वंदन करते हैं. उनकी मृदु तथा मीठी वाणी ही जप है. उनकी मृदु मधुर वाणी तप बराबर है.

उनकी विनयशीलता, सदाशिव का अनुग्रह होने के लिए पर्याप्त है. इस तरह का आचरण शरणों का होना चाहिए यदि ऐसा आचरण न रहा तो कुडल संगम प्रसन्न नहीं होंगे.

- डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
- 'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापूर रस्ता, सोलापुर - ४१३००४
०२१७-२३४२१९४, ०९३७१०९९७००

विशेष सूचना

दि. १० मई २०१३ को आंतर भारती के विश्वस्तों ने यह निर्णय लिया है कि जून २०१३ के अंक से आंतर भारती (मासिक) व आंतर भारती का आजीवन (१५ वर्ष) सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार होगा.

आन्तर भारती आजीवन सदस्यता (१५ वर्षों के लिए)	रु.	१०००-००
आन्तर भारती वार्षिक शुल्क	रु.	१००-००
आन्तर भारती एक अंक का मूल्य	रु.	१०-००

कृपया नोट करें.

विश्वस्त - सचिव
आंतर भारती ट्रस्ट

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
अध्याय ४. अऱन् वलियुरूत्तल (धर्म-महिमा)

ओल्लुम वहैयान् अऱविनै ओवादे
शेल्लम् वायेल्लुम् शेयल् । (कुरल ३३)

गुण व गण
से करो कर्म, वही
सच्चा धर्म ।

भावार्थ - सच्चा कर्म ही धर्माचरण है । इसके निभाने में मानव को अपनी समूची शक्ति सामर्थ्य का प्रयोग करना चाहिए ।

मनत्तुक्कण् मशिलन् आदल् अनैत्तु आऱन्
आहुल नीर पिऱ । (कुरल - ३४)

स्वच्छ मन से
कर्म ही श्रेष्ठ धर्म
न तो दिखावा

भावार्थ - निर्मल मन ही सर्वश्रेष्ठ धर्म है । बिना इसके हम जो भी कार्य करते हैं और जो कुछ कहते हैं, वह केवल आडंबर ही है ।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

जोधपुर

सूर्यास्त की देरी से 'रविनगरी' कहलाय ।
मारवाड़ उत्सव यहाँ, मनमोहक बतलाय ॥
मेहरानगढ़ का किला, घरता तोपें अस्त्र ।
फूल-शीश-मोती-महल, लखने भीड़ अजस्त्र ॥
यह जसवंत थड़ा किला, जसवंत की निशान ।
छतरियों पर दीखती, कारीगरी-निशान ॥
उम्मेद भवन पैलेस, आकर्षन का स्थान ।
वातानुकूलित यह थल, माना सुखर स्थान ॥
'थंभा महल' शिल्प कला, का अनुपम है केन्द्र ।
'ओसियाँ' भी मूर्ति-शिल्प, का अद्वितीय केन्द्र ।
'उम्मेद संग्रहालय' अस्त्र शस्त्र का केन्द्र ।
'उम्मेद प्राणीआलय' मगर मच्छ का केन्द्र ।

जैसलमेर

'जैसलमेर' पुर समीप, सरोवर विद्यमान ।
करते जेसल के लोग, गढ़सीसर-जल-पान ॥
सालिमकृत हवेली, दर्शनीय है स्थान ।
'बड़ा बाग' औ 'लौद्रवा' आकर्षन के स्थान ॥
ऊँट सवारी 'मेर' में मन मोहक बन जाय ।
रामदेव का सरोवर तीरथ-थल बन जाय ॥
'पोखरण' पर्यटकों के आकर्षन का केन्द्र ।
सोनार किले का भवन चित्रकला का केन्द्र ॥

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली,
चेन्नई - ६००००५.

संघर्ष और सफलता की गाथा

बराक ओबामा

- डॉ.विद्या केशव चिटको

(गतांक से आगे...)

ओबामा को सेनेट में स्थान पाने के लिए आगे बढने के लिए उसके कुछ मित्रों ने उत्साहित किया तो कुछ ने उसे सचेत करते हुए सावधान करते हुए कहा, "Obama! Don't Run!" (ओबामा ! दौड़ो मत !)

वह क्या करे ? उसके मन में बड़ा संघर्ष चल रहा था. उसके सिर पर बहुत बड़ा बोझ था. एक चिन्ता में वह जी रहा था. उसके मित्र ने एक स्थान पर लिखा है कि ओबामा इस चिन्ता में डूबा हुआ था कि यदि वह सीट जीत नहीं पाया तो? अपने कमिटमेंट्स जो उसने बनाये थे उनका पर्याय क्या होगा? उसकी पूर्ति कौन करेगा? यही चिन्ता उसे रात दिन खाये जा रही थी. आगे कदम बढ़ाने का वह साहस नहीं जुटा पा रहा था.

सन् २००२ में उसके घर में दूसरी बेटी भी आ गई थी. बडी सिर्फ चार साल की थी. सन १९९९-२००० में ओबामा सब समय अपने प्रचार दल पक्ष गुट के साथ, बाबी रश के साथ टक्कर लेने में व्यस्त रहा. उस समय वह हार गया था. और अब पुनः वह एक प्रयास, एक मौका एक बार फिर आगे कदम बढ़ाना चाहता था. उसने अमेरीकी सेनेट पद के लिए चुनाव लड़ने के लिए आगे बढ़ना तय कर लिया था.

एरिक अडेलस्टेन Eric Adelstin शिकागो में डेमोक्रेटस के लिए मीडिया परामर्श दाता रहा. उसने सितम्बर २००१ में ओबामा के साथ आपसी उपायों पर चर्चा के लिए एक बैठक बुलाने का निश्चय किया. उसने इस मीटिंग के बारे में लोगों को सूचना दी कि सभी नेतागण इस मीटिंग में आयें, अपने विचार रखे. इस बीच ११ सितम्बर २००१ की भीषण घटना घटी. 'ओसामा' और 'ओबामा' दोनों नामों में बहुत समानता. इस कारण वह चर्चा का विषय रहा. मीटिंग नहीं हुई. ओबामा पुनः पूर्ववत अपनी दोनों नौकरियाँ संवैधानिक विधि अनुदेशक तथा राष्ट्र विधि निर्माता के काम में जुट गया था. पर उसे चैन कहां थी? सन् २००२ के मध्य

फिर उसके दिमाग में सेनेट चुनाव के विचार तेजी से घूमने लगे इलिनायस सेनेट के सहयोगियों के साथ उसने चर्चा शुरू की. अनेक अनुभवी और दोस्त हितैषियों जैसे डनी जेकब, टेरी लिंक, जारी वाश और अफ्रिकन अमेरिकन संगठन सिनेट के एमिल जोन्स सभी उसके पक्ष में रहे. उन्होंने उसे पूरा सपोर्ट करने का आश्वासन दिया. उसे विश्वास दिलाया फिर भी वह पक्का निश्चय नहीं कर पा रहा था.

यह सब तो ठीक था. पर एक और व्यक्ति की राय और उसका सलाह मशविरा बहुत महत्वपूर्ण रहा - वह भी उसकी पत्नी-मिशेल. बराक उससे इस बात की चर्चा कैसे करे? शुरुआत कहां से करे? फिर भी हिम्मत कर डरते सहमते उसने अपने दिमाग़ में चलते विचार पत्नी के समाने शब्दों में उगल दिए.

मिशेल अपने पति की उच्चाकांक्षा महत्वाकांक्षा को समझती थी. उसके स्वर्णिम सपनों से भी परिचित थी. आकाश में उड़ान भरने की उसके पंखों की ताकत भी जानती थी फिर भी वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करना अपना पहला कर्तव्य समझती थी. दोनों बच्चियां छोटी थी. उनका खर्चा, उनके स्कूल की पढ़ाई का खर्चा, शिकागा में एक घर ले रखा था और एक वाशिंगटन में अपार्टमेंट उसके हफ्ते देने होते थे. दोनों ने अपनी पढ़ाई के लिए हार्वड से स्टुडेंट ऋण लिया था. उसे चुकाना था बाबी रश के साथ जब चुनाव में हार गया था उस समय का उसका भी उस पर कर्जा था और अब सेनेट पद के लिए ओबामा जीत भी गया तो भी उसकी आर्थिक स्थिति सुधर जाएगी इसका कोई भरोसा नहीं था..... मिशेल उसके लिए सोचती रही.

कानूनी विद्यालय का ऋण चुकाने के साथ-साथ उन्हें बच्चों की कॉलेज की पढ़ाई के लिए चाहिए भी कुछ रखना होगा. मिशेल ने बराक से कहा कि यह तो जुआ खेलना है. चुनाव जीत गया तो जीत ठीक है यदि हार गया तो सब गया. रस्सी खींच ही है. और यदि तुमने जीत को अपनी ओर खींच भी लिया तो भी अपने जीवन के यह महत्वपूर्ण कदम कैसे आगे बढ़ाओगे ?

ओबामा पत्नी की सारी बातें सुनता रहा. चुपचाप रहा. कारण पत्नी ने जो कुछ भी कहा था वह सब सोलह आना सच था. फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा. बोला - मैं किताब लिखूंगा, ''A good book and I am thinking snake eyes there buddy'' मिशेल को किताब लिखने की बात बड़ी हास्यास्पद लगी वह बोली, "Yep, Yep, Yep and you will climb the beanstalk and come back down with the golden egg jack !"

बराक ने मिशेल को विश्वास दिलाया कि मैं चुनाव में जीत जाऊँगा. यदि इस बार मैं नहीं जीता तो मैं राजनीती से हठ जाऊँगा.

मिशेल उसकी महत्वाकांक्षा समझती थी. उसने सारे खतरों को जानते समझते हुए वह आने वाली परिस्थितियों के साथ भिड़ने के लिए तैयार हो बोली, ''हम आपको निरुत्साहित नहीं कर रहे हैं, आगे बढ़ो''

इस संवाद के बाद वह शोमन के पास गया. उसने मिशेल के साथ हुई बातों को जस का तस उसे सुना दिया. मिशेल के साथ हुई बातों को जसका तस बोला. मिशेल ने मुझे हरी झंडी दिखा दी है. अब हमें आगे बढ़ना है. जीत की लड़ाई के लिए कमर कस कर आगे का करना है.

अब विकट प्रश्न था पैसे का. इतने पैसे तो बराक के पास नहीं थे. पैसे के लिए चंदा वसूलने के लिए उसे दानदाता चाहिए. उसने सर्वप्रथम अफ्रिकन अमेरिकन्स की एक मिटिंग मार्टी नेसबेट के घर बुलाई. उसकी Congressional compaign का चेयरमैन था. शिकागो पार्किंग मैनेजमेंट का प्रेसिडेंट था और Partibe kar realty group का Vice president रहा नेसबिट की पत्नी Anita Blanchard डॉक्टर थी. ओबामा की दोनों लड़कियों का जन्म उसी के हाथों हुआ था. नेसबिट मधुर भाषी और सज्जल सत्शील प्रवृत्ति का आदमी था.

बराक की बॉबी रश से हार खानी पड़ी थी. वह पैसे की कीमत जानता था. उसने नेसबिट से कहा कि जीत के लिए पैसा चाहिए और हजारों नहीं मिलियन डालर्स चाहिए. यह काम आकाश के तारे तोड़ने जैसा काम है दोस्त.

नेसबिट ओबामा को धीरज बंधाता रहा. उसे विश्वास दिलाता रहा. आश्वस्त करता रहा कि दस मिलियन डॉलर हम यदि जमा कर सके तो विजय निश्चित है याद रखो.

इसके लिए हमें खोजने होंगे पैसे देनेवाले. दाता उनके पास जाकर अपनी सारी बातें, भविष्य की योजनायें बतानी पड़ेगी.

बराक ! हम आगे तो बढ़ें देखें क्या होता है? - क्रमशः

अब अपनी रचनाएँ इस पते पर भेजें
डा.सी.जयशंकर बाबु
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग पांडीच्चेरी विश्वविद्यालय, कालापेठ, पुद्दुच्चेरी - ६०५०१४
चलध्वनि संपर्क : ०९८४३५०८५०६
ईमेल-editorbabuji@gmail.com / वेबसाईट-www.yugmanas.blogspot.com

बाल भारती

भावी नेता बालक

- बालस्वामी गौड

यह बालिक अच्छे
यह दिल के सच्चे
खूब खिलाओ इनको
खूब सिखाओ इनका
ठीक पाठ पढ़ाओ
ठीक शिक्षा इन्हें दो
यह जाती के मत वाले
यह देश के रखवाले
समय समय पर दीक्षा पालन
न रहे वे अचेतन
दूर रहें कुरीती से
प्यार करें नर-नारी से
देश की रक्षा के नायक
वे रहे जनता के पालक
वे बढ़ें गुरु जनों की सेवा में
वे आगे बढ़ें देश की सेवा में !

- घर क्र. १४-४२-२५३
साई नगर कालनी,
वनपर्ती - ५०९१०३

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

आठ तांका-कविताएं

- डॉ.रामनिवास 'मानव'

चक्र सदैव
चलता रहता है,
दुःख-सुख का ।
कभी दुःख का क्रम,
कभी सुख का भ्रम ।

*

जाता हेमन्त,
तब आता बसन्त ।
जग में यही
दुःख-सुख का क्रम,
कहते सदा सन्त ।

*

बाहर नहीं,
है सर्वस्व अपने
भीतर बाबा ।
क्या मन्दिर-मस्जिद,
और क्या काशी-काबा ।

*

मन मन्दिर,
दीपक जो नेह का
भीतर जले,
रहे फिर अंधेरा
नहीं उसके तले ।

*

भीतर उत्स,
है बाहर उत्सव ।
करती सदा
अभिनय कामना
मंच मन की बना ।

*

मात्र व्यापार
शाब्दिक प्रवचन ।
सत्य की दीप्ति
मिले अन्तर्मन में,
वही सच्ची सन्तृप्ति ।

*

विश्व में देश,
फिर देश में गांव,
गांव में घर ।
क्या औकात है मेरी
भला इस भू पर ।

*

जो कुछ पाया
सुख, धन-दौलत,
सब गंवाया ।
मोह-माया से बंधा
मन जान न पाया ।

*

- ७०६, सेक्टर-१३,
हिसार-१२५००७ (हरि.)

वन के लाभ ग्रामीणों को

- अपर्णा पल्लवी

(महाराष्ट्र संस्कार ने १० गावों को वन उत्पाद विक्री में से उनका हिस्सा देन की प्रशंसनीय शुरुआत की है. लेकिन इसमें कुछ प्रक्रियागत कमियां भी सामने आई हैं. आवश्यकता इस बात की है कि इस हिस्सेदारी के हिसाब-किताब का और अधिक पारदर्शी बनाया जाय. इसी के साथ यह उम्मीद भी की जानी चाहिए कि संयुक्त वन प्रबंधन एवं हिस्सेदारी की यह योजना महाराष्ट्र के अन्य गावों के साथ देशभर में शीघ्र ही क्रियान्वित हो. - का.सं.)

महाराष्ट्र में अब तक किसी भी गांव को संयुक्त वन प्रबंधन के अंतर्गत वन लाभों में से अपना हिस्सा प्राप्त नहीं हुआ था. अपने तरह की प्रथम पहल में महाराष्ट्र वन विभाग ने संयुक्त वन प्रबंधन योजना के अंतर्गत १० गांवों को लाभ में से उनका हिस्सा देने का निर्णय लिया है. इस संदर्भ में गढ़चिरौली जिले के आठ एवं गोंदिया जिले के दो गांवों को कुल ७४.५१.०६३ रुपए की राशि प्रदान की जाएगी. यह राशि उन्हें वन उत्पादों की बिक्री से प्राप्त धन पर लगने वाले ७ प्रतिशत वन विकास कर के माध्यम से प्रदान की जाएगी. संयुक्त सचिव द्वारा २४ मई को मुख्य वन संरक्षक को लिखे गए पत्र में यह जानकारी दी गई कि संयुक्त वन प्रबंधन योजना के अंतर्गत ग्रामीणों को वन उत्पाद में से उनका हिस्सा दिया जाना अनिवार्य है. हालांकि वर्ष १९९२ से लागू इस योजना से अब तक किसी भी गांव को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है.

वन विभाग के प्रमुख सचिव प्रवीण परदेशी का कहना है कि यह कदम उठाने में देरी इसलिए हुई क्योंकि अप्रैल २००३ के एक शासकीय प्रस्ताव के अनुसार संयुक्त वन प्रबंधन समिति गावों को तभी भुगतान करेगी जबकि यह सुनिश्चित हो गया हो कि उन्होंने कम से कम दस वर्षों तक वनों का संरक्षण किया हो. उनका कहना है 'चूंकि भुगतान सन २०१३ में होना है. अतएव संयुक्त वन प्रबंधन के खाते से भुगतान नहीं किया जा सकता. इसलिए यह तय किया गया वन सरचार्ज जो कि वनों का जिलास्तरीय विकास कोष है. के माध्यम से भुगतान का निर्णय लिया गया है. संयुक्त वन प्रबंधन समितियां वन की सुरक्षा करती है. अतएव उनका ही इस पर पहला दावा है. इस योजना के अंतर्गत आनेवाले गांवों को विभिन्न चरणों में इसी तरह भुगतान किया जाएगा.'

वन अधिकार समूहों ने इस पहल का स्वागत किया है. लेकिन के इस तथ्य से असंतुष्ट हैं कि वन विभाग ने राज्य संस्कार के १६ मार्च १९९२ के निर्णय की अवहेलना की है. क्षेत्र के प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ वन अधिकार कार्यकर्ता मोहन हीराबाई हीरालाल का कहना है कि सरकार का प्रथम निर्णय संयुक्त वन प्रबंधन गांवों के लिए बेहतर अवसर प्रदान करता था. इसके अंतर्गत वनों को पांच वर्षों तक संरक्षित करने के बाद लाभ प्राप्ति की पात्रता थी. उनका कहना है कि वर्ष १९९२ एवं 2003 के मध्य गठित संयुक्त वन प्रबंधन समितियों को १९९२ के सरकारी निर्णय के हिसाब से लाभ दिया जाना चाहिए. वहीं दूसरे सरकारी निर्णय के अंतर्गत संयुक्त वन प्रबंधन समितियों द्वारा प्राकृतिक वनों एवं रोपे गए वनों दोनों के लिए १० वर्ष की प्रतीक्षा अवधि अनिवार्य कर दी गई है.

वही परदेशी प्रथम सरकारी निर्णय को गांववासियों के लिए लाभप्रद नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार इसमें मुख्य लकड़ी पर भुगतान मिलने की पात्रता नहीं है. हालांकि सन् १९९२ के सरकारी प्रस्ताव की धारा ९ इस बात को अनुचित मानती है. इसमें साफ लिखा है कि संयुक्त वन प्रबंधन वनों के सभी उत्पाद जिसमें निस्तार आवश्यकताएं एवं वन उत्पादों के इस्तेमाल से संबंधित सामुदायिक अधिकार शामिल हैं प्राथमिकता के आधार पर समितियों को दिए जाएं. शेष ५० प्रतिशत समितियों को नकद प्रदान किया जाए.

मोहनभाई ने आरोप लगाया कि विभाग जानबूझकर मूल सरकारी प्रस्ताव से खिलवाड़ कर रहा है और ग्रामीणों को नुकसान पहुंचा रहा है. विभाग प्रत्येक गांव से वर्षानुसार एवं उत्पाद के हिसाब से अर्जित धन की विस्तृत जानकारी भी नहीं दे रहा है. उनका कहना है ग्रामीणों को सिर्फ धन देना ही काफी नहीं है. सभी तरह के रिकार्ड में पारदर्शिता होनी चाहिए और ग्रामसभाओं से अनुमति भी ली जानी चाहिए. प्रमुख सचिव को लिखे गए पत्र में उन्होंने वेबसाईट पर विस्तृत हिसाब देने की मांग की है. साथ ही उन्होंने यह भी मांग की है कि ऐसी पद्धति विकसित की जाए जिससे कि संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के वन उत्पाद की बिक्री के तुरंत बाद अपना हिस्सा प्राप्त हो सके.

श्री परदेशी के अनुसार मोहनभाई के वितरण संबंधित विस्तृत हिसाब देने के प्रस्ताव को सरकार ने मान लिया है और इस पर शीघ्र अमल करेगी. भविष्य में भुगतान के संबंध में उनका कहना है कि सरकार के २५ अक्टूबर २०११ के नवीनतम प्रस्ताव के अनुसार समितियों को वार्षिक भुगतान वन उत्पादों की बिक्री के तुरंत बाद प्रदान कर दिया जाए. लेकिन उनकी इस बारे में चुप्पी है कि संयुक्त वन प्रबंधन का हिसाब किताब विभाग की वेबसाईट पर प्रदर्शित किया नहीं ?

समाचार भारती -१

१० मई, गोवा में हुआ कार्यक्रम

चौतरफा बढ़ती आबादी, नहीं मिल रहा आदमी

(गोवा से लौटकर प्रिंस अभिशेख अज्ञानी)

- आंतर भारती आंदोलन के समागम में सुब्बराव
मुखवाणी विवादित, हृदयवाणी निर्विवादित : सदाविजय

पैसा, पद, वाहन, चिकित्सक, अभियंता व विशेषज्ञ बढ़ रहे हैं और इमारतें बनरही हैं मगर आदमी नहीं मिल रहा. यह पीड़ा आयु से वयोवृद्ध लेकिन तन मन से युवा, स्वतंत्रता सेनानी, चंबल घाटी में दस्यु आत्म समर्पण के प्रणेता, विश्वव्यापी युवाओं के उत्प्रेरक और राष्ट्रीय युवा योजना के निदेशक डॉ.सेलम नण्जुण्डय्या सुब्बाराव ने व्यक्त की. उन्होंने कहा स्वाधीन इंसान का अर्थ है कि वह झूठ नहीं बोलेगा, दूसरे को दर्द या हानि नहीं पहुँचाएगा, भारत को अपना मानेगा, भुखमरी-गरीबी-बेकारी मिटाएगा और किसी भी प्रकार का नशा नहीं करेगा. वहीं महाराष्ट्र के लातूर जिले के औराद शहाजानी कस्बा स्थित व प्रख्यात संत साने गुरुजी द्वारा एकात्म भारत के नवनिर्माणार्थ संस्थापित आंदोलन आंतर भारती के सचिव प्राचार्य सदाविजय आर्य ने आज मानव-मानव के इक दूजे से दूर होते जाने, आत्मीय संपर्क नहीं रहने और समाज व परिवार के टूटते जाने पर दुख जताया.

उन्होंने कहा कि मुखवाणी तो अक्सर विवाद पैदा करती है मगर आंतर (हृदय) भारती (वाणी) न सिर्फ निर्विवादित होती है अपितु मनुष्य से मनुष्य को मिलाती है और ऐसा होते ही आंतर भारती आंदोलन का उद्देश्य पूरा होता है तथा उसके उन्नायक साने गुरुजी का लक्ष्य संधान होता है. पंढरपूर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह में उद्बोधन दे रहे थे. गोवा प्रांत सावर्डे कुडचडे नामक स्थान पर सर्वोदय उच्चतर विद्यालय में आंतर भारती की राज्य इकाई ने यह आयोजन रखा था. उसमें जम्मू कश्मीर, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पांडिचेरी व गोवा प्रांत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, शुभारंभ सत्र में इस अवसर पर सर्वोदय शाला की प्रधानाचार्य श्रीमती मृणालिनी कुडचरकर, विद्यालय सुवर्ण

महोत्सव समति के अध्यक्ष डॉ. गुरुदास नाईक व राष्ट्रीय युवा योजना के गोवा प्रांताध्यक्ष अमृत नाईक मुख्य रूप में मंचासीन थे.

आरंभ में उन्होंन संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर आयोजन का आगाज़ किया तथा समारोह को बारी बारी से संबोधित किया. श्रीमती मृणालिनी ने अपने गोवा की राजभाषा कोंकणी में उद्‌बोधन कर कार्यक्रम की सफलता की कामना की. वहीं अपने संबोधन में श्री सुब्बराव ने आगे कहा कि हम ऐसी जीचें अपनाएँ जो हमें शक्तिशाली बनाएँ और प्रतिदिन एक घंटा देह (व्यायाम आदि) तथा एक घंटा देश (राष्ट्रसेवा) को देने का आह्वान किया. उन्होंने खूबसूरत गावों में कदम कदम पर शराब की दुकाने होने पर खासा आक्षेप लिया व कटाक्ष किया. शुरुआत में औराद शहाजानी में आंतर भारती द्वारा संचालित रमामाता आंबेडकर अध्यापिका विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया. आभार आंतर भारती के गोवा राज्य के संगठक व आयोजन के स्थानीय सूत्रधार एन.सुहास ने माना.

पूर्वार्द्ध में द्वितीय सत्र आंतर भारती के ब्रह्मलीन हुए तीन अनन्य सहयोगियों / पदाधिकारियों, पुष्कर भाई पण्ड्या (गुजरात), शशिकांत डोंगरे (महाराष्ट्र) व श्रीमती सुहासिनी ताई कुलकर्णी (महाराष्ट्र) को मौन श्रद्धांजलि अर्पण से शुरु हुआ.

संचालन करते हुए प्राचार्य सदाविजय आर्य ने आंतर भारती के बीते पाँच वर्षों का कार्य व गत बैठक (मैंसाना में) का विवरण, लेखा अंकेक्षण ब्यौरा और भावी कार्यक्रमों का प्रारूप रखा. उन्होंने आतर भारती की मासिक पत्रिका के प्रकाशन, प्रेरणा प्रबोधन शिविर, अंतरजातीय विवाह, रक्तदान शिविर, बाल आनंद महोत्सव व छात्राओं को अन्य प्रातों में भ्रमण का अवसर देना आदि गतिविधियों का उल्लेख किया. इसी सत्र में आंतर भारती की नवीन कार्यकारिणी गठित की गई. उसमें आनंद मोहन माथुर (इंदौर, मध्यप्रदेश) पुनःअध्यक्ष, प्राचार्य सदाविजय आर्य दुबारा सचिव, हर्षदभाई रावल (गुजरात) राष्ट्रीय संगठक व अमीर हबीब फिर से कोषाध्यक्ष चुने गए.

इस कड़ी में पांडुरंग नाडकर्णी - राष्ट्रीय कार्यवाहक समिति अध्यक्ष निर्दलीय के संपादक व जन संगठन दृष्टि के निदेशक प्रिंस अभिशेख अज्ञानी कार्यवाह संपादक आंतर भारती मासिक पत्रिका डॉ.सी.जयशंकर बाबू - दक्षिण भारत संगठक, मनोज कुमार शर्मा व अब्दुल रहमान - जम्मू कश्मीर, एन.सुहास - गोवा, उत्तर पूर्व - हरि विश्वास, बिहार एवं उड़ीसा - मधु तलवलकर, उत्तरप्रदेश - तुलाराम शर्मा, केरल - एन.संतोष, तमिळनाडु - ओझा, दिल्ली -

विभा वसु, राजस्थान - मनोज व्यास, गुजरात - संविदा पंड्या, मध्यप्रदेश - तपन भट्टाचार्य, महाराष्ट्र - हनुमंत देसाई तथा अविनाश शेनाड, राजा महाजन, बाल आनंद महोत्सव प्रमुख नरेन्द्र वडगाँकर, शारदा जाधव, प्रेरणा प्रबोधन शिविर - उमाकांत चनशेट्टी, विदेश संपर्क - सुरेन्द्र जोशी और विविध गतिविधी सहित विभिन्न पदाधिकारी चुने गए, तथा हर वर्ष विशेष कार्यक्रम सत्र में प्रस्ताव आए कि एक हजार अंतरजातीय विवाहित परिवारों का सम्मेलन, तथा हर वर्ष विशेष कार्यक्रम २४ दिसंबर को, आंतर भारती का आजीवन सदस्यता शुल्क (मय आंतर भारती पत्रिका) बढ़कर एक हजार रुपए और आगामी वर्ष में उसका स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाने तैयारियों तेज हों. साथ ही बताया गया कि इस वर्ष के अंत में बाल आनंद महोत्सव वर्धा में होगा और शिक्षा पत्रोपाधि (डीएड) छात्राओं को प्रतिवर्ष परप्रांत घुमाने के उपक्रम की प्रशंसा इस आशय से भी की गई कि विवाहोपरांत उनका भ्रमण अवसर मिले न मिले मगर बंद दायरों से बाहर निकालकर बाहरी दुनिया दिखाने का आंतर भारती का यह जतन सराहनीय है.

अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए श्री सुब्बाराव ने कहा कि आज स्वयंसेवी या सामाजिक संगठनों द्वारा पैसे खाने और चौतरफा बलात्कार बढ़ने की खबरें आने से विश्व पटल पर भारत माँ अस्वस्थ दिख रही हैं. उन्होंने ब्रह्मलीन प्रख्यात समाज परिवर्तक बाबा आमटे का यह कथन उद्धृत किया कि अपने कार्य की बढ़ चढ़कर रपट बनाना और पैसा इकट्ठा करना मेरा काम नहीं. आपने नव चयनित पोप के उन उद्‌गार को भी रखा. जिसमें ईसाई धर्म प्रचारकों प्रसारकों व कर्यकर्त्ताओं प्रसारकों व कर्ताधर्ताओं द्वारा पलटकर पूछा था कि इन सब कामकाजों से दुनिया में आज प्यार बढ़ा है या रंजिश बढ़ी है? श्री सुब्बराव ने उद्घघाटन सत्र की तरह इस सत्र में भी अपने चिर परिचित मधुर व ओजस्वी कंठ से राष्ट्रभक्ति गीतों का समूह गायन कराया तो सभागार राष्ट्रीय भाव एवं युवा प्रेम के नारों से गूँज उठा.

स्वागत और सत्कार :-

शाम का सत्र अतिथियों के स्वागत व विभूतियों के सत्कार के लिए समर्पित था. आरंभ में प्रस्ताविका पांडुरंग नाडकर्णी ने रखी. डॉ.सुब्बराव, पूर्व माझी आमदार जयवंत ठाकरे, वरिष्ठ पत्रकार व आंतर भारती न्यास के कोषाध्यक्ष अमर हबीब, शोलापुर विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र) के संस्थापक कुलपति डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी, प्राचार्य डॉ. कमल ठकार भारतीय जीवन बीमा निगम गोवा के संपत्ति

प्रबंधक एवं दलितोद्धारक सूरज के.नाईक, संपादक आंतर भारती पत्रिका तथा पांडिचेरी विद्यापीठ के सह प्राध्यापक हिन्दी डॉ.सी.जयशंकर बाबू, सर्वोदय शिक्षण संस्थान उच्चतर शाला स्वर्ण महोत्सव समिति सावर्डे कुडचडे (गोवा) के अध्यक्ष डॉ.गुरुदास नाईक, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता पांडुरंग नाडकर्णी, हर्षद भाई रावल और कस्तूरबा आश्रम जिला अमरावती (महाराष्ट्र) के गुरुजी मा.झि.गावंडे, मंचासीन थे. स्मृति चिह्न, दो पुस्तक व श्रीफल प्रदान कर उनका स्वागत क्रमशः उमाशंकर चन्नशेट्टी, संगीता चन्नशेट्टी, मधुश्री आर्य दीदी, राधिका जयशंकर बाबू, एन.सुहास, शारदा बिरादार, मंगला बलसुरकर, लैला महाजन, मंगला घुमाडे, स्नेहलता नामवाड़ व सुवर्णा अहिरराव ने किया.

वही औराद शहाजानी (महाराष्ट्र) स्थित शिक्षा डिप्लोमा की (डीटीएड) विद्यालय की प्राचार्य डॉ.शारदा जाधव व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्रीधर वेरेकर का सत्कार पुस्तकें, अंगवस्त्र (साडी आदि), स्मृति चिह्न, शाल एवं श्रीफल प्रदान कर क्रमशः जयवंत ठाकरे और डॉ.सुब्बराव ने किया. शुरुआत में उमाकांत चन्नशेट्टी ने प्रस्तावना रखी. अपने उद्‌बोधन से सत्कार का प्रत्युत्तर डॉ.शारदा जाधव ने दिया और बताया कि बचपन में वे जब साने गुरुजी का साहित्य पढ़ती थीं तो रो पड़ती थीं. श्रीधर वेरेकर ने कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों का आज जैसा पतन कभी नहीं हुआ. उन्होंने कहा कि दस मई १९४७ को पंढरपुर (महाराष्ट्र) स्थित मंदिर में हरिजन प्रवेश का सूत्रपात करनेवाले साने गुरुजी का व्यक्तित्व व कृतित्व अतुलनीय था.

डॉ.सी.जयशंकर बाबू व डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी ने भी यही विचार अपने-अपने ढंग से रखे. सुविख्यात समाज परिवर्तक ब्रह्मलीन यदुनाथ थत्ते को डॉ.कमल ताई ठकार ने अपने समय का चलता फिरता विश्वविद्यालय निरुपित किया. मनोगत रखते हुए डॉ.गुरुदास नाईक ने कहा कि साने गुरुजीव श्री थत्ते अपने विचार, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सदा जीते रहेंगे. श्री सुब्बराव ने हमारा प्यारा भारत वर्ष गीत का सामूहिक गान कराया. अध्यक्षीय भाषण में सूरज के नाईक ने कहा आज जिस पवित्र भारत भूमि का उसके नता सत्यानाश कर रहे हैं, वहाँ विदेशी भी सदियों सेआने के लिए लालायित रहे हैं. आभार एन.सुहास ने माना.संचालन प्रिंस अभिशेख अज्ञानी ने किया.

इस एक दिवसीय समागम का समापन सत्र रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति से हुआ. शासकीय कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सावर्डे के एक दर्जन छात्र छात्राओं ने अपने दो समूह नृत्य से सभी उपस्थितों को मंत्रमुग्ध

कर दिया. निखिल नाईक, कल्पेश नाईक, गौतम फड़ाते, किरण प्रकाश नाईक, दिव्यता डी. खांडेकर, चैताली बी.घड़ी, सतिश नाइक, सैना एम.नाईक, भाश्री खंडाले, अंजलि मापारी, शैली हर्मलकर व रागिणी देसाई ने लय एवं ताल के साथ इतना सधा, संतुलित तथा मझा हुआ नाच पेश किया कि हर एक गोवा प्रांत की नाचगानकी संस्कृति के जीवंत स्वरूप से हर्षित रोमांचित हो गया! कट्टी (करवंटी) नृत्य के कोंकणी आमची गोयची भास ही गोयां राज्य भास, बोल में आशय था कि हमारी हमारे गोवा की भाषा और यही राज्यभाषा है.

उतरा माज्या मामा, हाव सांगता तुका, त्या माजोरीच्या पीला लागी खेल मांडी नाका.... उंदीर मामा आयलो आगण खाटी पोदा लीफ्लो, त्या माजोरीच्या पीलान तेका एका घासा खाययो, बोल लिए, उनकी दूसरी प्रस्तुति कुणबी नृत्य के रूप में थी.

उक्त कड़ी में औराद शहाजानी स्थित आंतर भारती के रमामाता आंबेडकर अध्यापिका विद्यालय की २० छात्राओं के दल ने प्राचार्य डॉ. शारदा जाधव व शिक्षिका श्रीमती शारदा बिराजदार के संयोजन और शिक्षक मरदसे दत्ता तथा सहयोगी निटूरे हुसैन के सहकार के समूचे समागम के प्रायः हरेक सत्र में समूह गान एवं मौजूदा समापन सत्र में एक से एक आधा दर्जन नृत्यों की सरस, मनुहारी प्रस्तुति दी. आयशा वाडीकर, प्रियंका रेड्डी, आशा कुनाले, ज्योति पाटील, रेखा उर्के, अलका गंगथडे, जयश्री सूर्यवंशी, मलेका बारूदवाले, शीतल हांडे, स्नेहा गायकवाड, स्वाति वारले, ज्योति नरवटे, सुचिता बिराजदार, राजाबाई लोहार, सुरेखा देशमुखे, वर्षा माडजे, ज्योति माने व सोनी कांबले नामक छात्राओं ने जहाँ डाल डाल पे करती है सोने की चिड़िया बसेरा वो भारत देश है मेरा, हमें इश्क है इस सरजमीं से... वंदे मातरम और कृष्ण लीला आदि नृत्यों की मनभावन पेशकश ने हर एक को लुभा लिया.

इस सत्र का सूत्र संचालन करते हुए आंतर भारती के सचिव दीपक बलसुरकर ने स्वयं की अपनी प्रस्तुतियों से उपस्थियों को रोमांचित किया. सदानंद नाईक, अभिनय नाईक, श्रीकर सुहास नाईक, शिक्षक शेख सलाउद्दीन हसनोद्दीन, पत्रकार वामन वैद्य, वसंत गोखले, बालाजी चव्हाण व एकनाथ नाईक आदि ने मुख्य रूप से योगदान दिया. समाराह में मनोज निश्चित, पाटिल प्रशांत भाऊराव व प्राध्यापक सुभाष बाबूराव लिंगायत आदि उपस्थितों में सम्मेलित थे.

'निर्दलीय' से साभार

(चित्र मुखपृष्ठ व अन्य पृष्ठ पर)

आन्तर भारती ट्रस्ट

विश्वस्त मंडल एवं राष्ट्रीय कार्यवाही समिति संयुक्त बैठक

दि. १० मई २०१३ - प्रातः ११.०० बजे कुडचडे (गोवा)

सर्वोदय हाईस्कूल सभागृह

आज पूर्व सूचनानुसार विश्वस्त मंडल एवं राष्ट्रीय कार्यवाही समिति की संयुक्त बैठक प्रारंभ हुई.

उपस्थितों के हस्ताक्षर अलग नोट बुक में हैं.

१. मा.विश्वस्त - अध्यक्ष श्री आनंद मोहन जी माथुर अस्वस्थता के कारण उपस्थित न हो सके अतः ज्येष्ठ / वरिष्ठ विश्वस्त डॉ.एस.एन.सुब्बरावजी का नाम श्री सदाविजय आर्य ने आज की बैठक के संयुक्त अध्यक्ष के लिए सुझाया. जिसका श्री अमर हबीब ने अनुमोदन किया. सभी उपस्थितीनों समर्थन किया. अतः डॉ.एस.एन.सुब्बारावजी ने अध्यक्ष के रूप में तथा कार्याध्यक्ष के रूप में श्री हर्षद भाई रावल ने पद स्वीकार किया. संयुक्त अध्यक्षों की सहमति से बैठक प्रारंभ हुई.

२. गत बैठक का विवरण : विश्वस्त सचिव श्री आर्य ने बताया कि ऐसी संयुक्त बैठक १०.०५.२००९ को मेहसाना (गुजरात) में हुई थी. तत्कालीन कार्यवाह श्री शशिकांत डोंगरे ने बैठक का विवरण लिखा था. पर अचानक उनका निधन हो जाने से वह बैठक विवरण उपलब्ध नहीं है अतः इससे पूर्व की संयुक्त बैठक जो इंदौर में हुई थी उसका सचिव महोदय ने वाचन किया. जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया.

३. श्री शशिकान्त डोंगरे (दि. २६.१२.२०१०)

श्री पुष्करभाई पंड्या (दि. २६.११.२०१२)

श्रीमती सुहासिनी कुलकर्णी (दि. २७.०३.२०१३)

का निधन हो जाने से सभी सदस्यों ने खडे होकर १ मिनट मौन रहकर श्रद्धांजति अर्पित की.

गत कार्य विवरण :

सचिव महोदय ने निम्न प्रकार कार्य विवरण प्रस्तुत किया -

१) रक्त सहयोग : गत २५ वर्षों से रक्त सहयोग का शिविर औराद शहाजानी में प्रति वर्ष होता है जिसमें ६०% महिलाएं रक्त सहयोग करती हैं.

२. मासिक पत्रिका - १९६४ से आंतर भारती मासिक निरंतर प्रकाशित हो रहा है. आगामी वर्ष सुवर्ण महोत्सवी अंक प्रकाशित करने का मानस है.

३. बाल आनंद महोत्सव - गत १४ वर्षों से राष्ट्रीय युवा योजना के आयोजकत्व तथा आंतर भारती के सहयोग से प्रतिवर्ष भिन्न-भिन्न प्रांतों में आयोजन हो रहा है. इस कार्य में स्व.शशिकांत व श्री बालाजी चव्हाण, श्री विजय कुमार बैले व श्री शेख सलाउद्दील का सक्रिय सहयोग है.

४. प्रेरणा प्रबोधन शिविर - प्रति वर्ष औराद शहा. में तथा गत दो वर्षों में दो बार उज्जैन में इसका आयोजन होता रहा है. तदर्थ तज्ञ लोगों का एक शिविर भी पुणे में आयोजित किया जा चुका है.

५. भारत दर्शन - गत दस वर्षों से भारत दर्शन की युवतियों की यात्रा पूर्ण भारत दो बार देख चुकी है.

६. भारत जोडो - तदर्थ भारत जोडो ट्रस्ट में सहयोग किया जा रहा है.

७. अंतर्जातीय विवाह - आंतर भारती के प्रेरणा व प्रोत्साहन एवं सहयोग से अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति यह कार्य अच्छी तरह से कर रही है.

८. परिवार मिलन - आंतर भारती औराद शहाजानी के सदस्य हर दो-तीन माह के बाद सारे सदस्य सपरिवार एक सदस्य के घर पर मिलते है और सहभोज व मनोरंजन का कार्यक्रम होता है.

९. सांस्कृतिक कार्यक्रम - गीत व घोषणा तथा कथाकथन के माध्यम

से राष्ट्रप्रेम जागृत करने का विशेष कार्यक्रम का प्रयोग इंदौर (म.प्र.) में किया गया.

गुजरात में राष्ट्रप्रेम पर आधारित समूहनृत्य के १५ दिनों में लगभग ३० कार्यक्रम किए गए. स्थान स्थान पर / अन्यान्य अवसरों पर भारत की संतान डा.सुब्बारावजी ने गाए हुए गीत पर समूह नृत्य के द्वारा १०० से अधिक कार्यक्रम किए जा चुके हैं.

प्रति वर्ष १० मई का पंढरपुर सत्याग्रह एवं स्व.यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह अलग-अलग प्रांतों में आयोजित कर समूह नृत्य के द्वारा राष्ट्र प्रेम व एकात्मता के लिए प्रबोधन कार्यक्रम किए जाते हैं.

१०. शिविर-सहभाग - आन्तर भारती की ओर देश भर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होनेवाले शिविर, बैठक, कार्यक्रमों में युवा, सदस्य व कार्यकर्त्ताओं को भेजा जाता है.

५. पुणे के कार्यालय के संबंध में साधना के ट्रस्टियों ने कैसा अभद्र व्यवहार किया एवं राष्ट्र सेवादल ने पूरा रिकार्ड जला दिया आदि के बारे में सचिव महोदय ने सभी को विस्तृत जानकारी दी.

६. आय-व्यय विवरण - विलंब के कारण का उल्लेख कर सचिव महोदय ने वर्ष १९९९ से २००६ तक का अंकेक्षित हिसाब प्रस्तुत किया जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया.

७. विश्वस्तों का निर्वाचन :

(अ) विश्वस्तों ने सर्व सम्मति से श्री आनंद मोहन माथुर को आगामी तीन वर्षों २०१३-२०१६ तक के लिए अध्यक्ष निर्वाचित किया.

सूचक : सदाविजय आर्य

अनुमोदक : श्री सी.जयशंकर बाबू

(ब) सभीने सचिव पद पर फिर से श्री सदाविजय आर्य के ही आग्रहपूर्व सचिव बने रहने का आग्रह किया. सर्व सम्मति से निर्वाचित.

सूचक : डा.सी.जयशंकर बाबु

अनुमोदक : श्री अमर हबीब

(क) श्री सदाविजय आर्य ने कोषाध्यक्ष पद के लिए श्री अमर हबीब का नाम सुझाया जिसका डा.सुब्बाराव जी ने अनुमोदन किया. सर्व सम्मति से उन्हें २०१३ से २०१६ तक के लिए निर्वाचित किया गया.

८. राष्ट्रीय कार्य समिति

१. इस समिति के कार्याध्यक्ष पद पर सर्व सम्मति से श्री पांडुरंग जी नाडकर्णी का नाम स्वीकृत हुआ.

२. कार्यवाह पद के लिए श्री प्रिंस अभिषेक अज्ञानी को सर्वसम्मति से चुना गया.

३. राष्ट्रीय संघटक के पद पर श्री हर्षद भाई रावल तथा श्री गिरीश वाळिंबे को चुना गया.

४. संघठक पद के लिए लिए निम्न लोगों का तथा रिक्त स्थान पर अध्यक्ष एवं सचिव को योग्य व्यक्ति नियुक्त करने का अधिकार सर्व सम्मति से दिया गया.

गुजरात	-	सुश्री संविदा पंड्या
गोवा	-	एन.सुहास
जम्मू-कश्मीर	-	अब्दुल रहमान, मनोज शर्मा
महाराष्ट्र	-	अविनाश शेनाड, हणमंत देसाई, राजा महाजन
दक्षिण भारत	-	डॉ.सी.जयशंकर बाबु
उत्तर प्रदेश	-	तुलाराम जी शर्मा
उडीसा-बिहार	-	मधु तळवळकर
कर्नाटक	-	उमाकान्त चनशेट्टी
म.प्र.	-	तपन भट्टाचार्य
पूर्वोत्तर भारत	-	हरिविश्वास
छत्तीसगढ़	-	विनय कुमार
दिल्ली	-	विभा वसु तिवारी
राजस्थान	-	मनोज व्यास

त्रिपुरा	-	दीपक सिन्हा
केरल	-	एन.सुहास

९. कार्यप्रमुख - कार्यप्रमुखों का सर्व सम्मति से चयन निम्न प्रकार हुआ एवं आवश्यकतानुसार अध्यक्ष / सचिव भी नियुक्त कर सकेंगे ऐसा सर्व सम्मत निर्णय हुआ.

विदेश संपर्क	-	सुरेन्द्र जोशी
बाल आनंद महोत्सव	-	नरेन्द्र वडगावकर / शारदा जाधव
मासिक पत्रिका	-	डा.सी.जयशंकर बाबु
गुजरात शि.सं.संदर्शन	-	श्री अविनाश शेनाड
यात्रा	-	दीपक बलसूरकर
शिक्षक प्रेरणा प्रबोधन शिविर	-	उमाकांत चनशेट्टी

१०. अध्यक्ष महोदय की अनुमति से -

अ) २०१३ का बाल आनंद महोत्सव श्री जे.यू.नाना ठाकरे साक्री में लेंगे ऐसा कथन स्वीकार हुआ.

ब) श्री अमर हबीब ने स्थाई कार्यक्रम कहकर २४ दिस. को हरवर्ष साने गुरुजी जयंती कहकर कुछ ना कुछ कार्यक्रम सभी करें, ऐसा सुझाव रखा जिसे सभी ने स्वीकार किया.

क) संभव हो तो १००० अंतर्जातीय विवाहित परिवारों का सम्मेलन विशाल स्तर पर किया जाए. इस पर अर्थव्यवस्था होने पर किया जाए. ऐसा निश्चय हुआ. आभार प्रदर्शन के बाद संयुक्त बैठक समाप्त हुई.

ड) (iv) सर्व सम्मति से आजीवन सदस्यता शुल्क (१५ वर्ष) रु. एक हजार करने का तथा मासिक आंतर भारती का वार्षिक रु. एक सौ तथा एक अंक का दस रु. जून '१३ से करने का सर्वसम्मत निर्णय हुआ.

विश्वस्त-अध्यक्ष	**विश्वस्त-सचिव**
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	**राष्ट्रीय कार्यवाह**

१० मई के कार्यक्रम की झलकियां

प्रातः मंच पर अतिथि

दीप प्रज्ज्वलन

भाईजी गीत गवाते हुए

श्रीधर वेंरेकर का सत्कार

शाम को मंच पर

'भारत की संतान' सहभागी

समाचार भारती -३

अंतर्राष्ट्रीय युवा शांति एवं सद्भावना शिविर कोटा राज.

दि. २२-०४-२०१३ से २८-०४-२०१३

गतांक से आगे -

(गत अंक में २२ से २५ .०४.२०१३ तक का विवरण था शेष २६ से २८.०४.२०१३ तक का विवरण प्रस्तुत है.)

अपनी दैनिक दिनचर्या के पश्चात् ६.३० बजे ध्वजारोहण हेतु शिविर के पंचम दिवस माँ भारती शिक्षा समूह के निदेशक महेष विजयवर्गीय पधारे. इन्होंने युवाओं को राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्य का आभास कराया व संदेश किया की सभी युवा भाई जी के संदेश को पूरे विश्व में फैलायें और युवाओं का कोटा की धरती पर स्वागत किया.

सभी ने श्रम का कार्य किया. भोजनोपरान्त २:३० से ४:०० बजे तक भाई जी का शिविरार्थियों के साथ विचारविमर्ष सत्र चला जिसमें ''मेरे सपनों का भारत'' विषय पर विचारविमर्श चला जिसमें १६ युवाओं अपने विचार रखे.

'गांधीजी ने जैसा सोचा, वैसा हो मेरा भारत.'

मेरे सपनों का भारत विषय पर युवाओं के विचार जाने गए. जिसमें युवाओं ने अपने विचार रखते हुए कहा कि गांधी जी ने जो सपना भारत के प्रति देखा था वैसा भारत होना चाहिए. एक ऐसा राष्ट्र बनें भारत जहां अपराध नहीं हो लोग सद्भावना व शांति से रहें. महिलाओं के प्रति सम्मान हो.

सांयकालीन सर्वधर्म प्रार्थना सभा :

नौजवान नशे की ओर जा रहे हैं. ऐसे नौजवानों को चाहिए कि वे इस आदत को सिर पर नहीं बैठने दें. युवाओं से नशा छोडने की यह अपील शुक्रवार को डा.एस.एन.सुब्बराव ने शिविर के पांचवे दिन तलवंडी सर्किल पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में की. उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि नशा नास करता है इसलिए नशे से दूर रहकर अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाएं.

उन्होंने कहा कि विश्व में धर्म के नाम पर अनेक लडाइयां लडी गईं. तब विश्व में यह मांग उठने लगी क्यों न धर्म समाप्त कर दिया जाए. तब भारत के युवा

विचारक स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में हुए धर्म सम्मेलन में सभी देशों के प्रतिनिधियों को संदेश दिया कि धर्म तो दिलों को जोड़ता है इसलिए धर्म रहेगा तो ही शांति रहेगी. उसके बाद धर्म को लोगों ने फिर से अपनाना शुरु किया. उन्होंने दिल्ली में आए दिन हो रही दुष्कर्म की घटनाओं के लिए चरित्र की गिरावट और टीवी को जिम्मेदार ठहराया. श्रम संस्कार के महत्व को समझाते हुए डा.सुब्बराव ने कहा कि हम एक घंटा भी अगर अपने आस पास के क्षेत्र को दें तो उसे सुंदर बना सकते हैं. लेकिन भारतीय दिखावे के चक्कर में श्रम से दूर होते जा रह हैं और दिखावे के पीछे लोग पागल हैं. उन्होंने कहा कि दो तरह की शक्तियां देश को नुकसान पहुंचा रही हैं. पहली शक्ति है निष्क्रिय सज्जन और दूसरी शक्ति है सक्रिय दुर्जन. अगर सज्जन सक्रिय हो जाएं तो दुर्जन स्वतः ही निष्क्रिय हो जाएंगे. इस मौके पर शिविर में शामिल हुए कोटा के युवाओं से डा.सुब्बराव ने अपील की शहर की शांति इसी तरह बनी रहे इसके लिए वे शिविर में सिखाई गई बातों को अपनाएं और शहर को आदर्श बनाएं. कार्यक्रम की सम्मानित अतिथि महापौर रत्ना जैन थीं. महापौर ने इस मौके पर देश और विदेश से आएं युवाओं का धन्यवाद दिया तथा भाई जी को कोटा शिविर के लिए चुनने हेतु धन्यवाद दिया. इस मौके पर गुजरात, पंजाब उडीसा के युवाओं ने अपने राज्यों की सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी.

''स्मारिका'' का हुआ विमोचन

शिविर को यादगार बनाने के लिए 'अविरल' नाम से स्मारिका प्रकाशित की गई जिसका संपादन प्रधान संपादक पुरुषोत्तम पंचौली उनके सहयोगियों के द्वारा किया गया. समारोह में आदरणीय भाई जी तथा महापौर रत्ना जैन ने आयोजन समिति के समक्ष विमोचन किया 'अविरल' में कोटा का इतिहास, कोटा डोरिया व उससे जुड़े लेख हैं.

(क्रमशः)

अब आंतर भारती (मासिक) आप वेब साईट पर भी हर माह के पहले सप्ताह में पढ़ सकते हैं.

आन्तर भारती ट्रस्ट की वेब साईट देखें सुझाव भेजें

www.antarbharati.org.in

समाचार भारती -४

आनन्द केन्द्र, ग्वालियर

जिये तो ऐसे जियो

प्राकृतिक जीवनशैली आवासीय शिविर

दिनांक १० अगस्त से १७ अगस्त २०१३ तक

विवेकानन्द नीडम्

हरिशंकरपुरम् के पीछे, नीडम् मार्ग

ग्वालियर - ४७४००२

फोन : ०७५१-२३४४८६६ मो. ०९३००७६३७१५

Email - vivekanandneedam@gmail.com

www.vivekanandneedam.org

सहयोग :-न्यूनतम रु. ४०००/- विवेकानन्द नीडम् पर सभी व्यय सम्मिलित

प्रवेश :- आयु १८ वर्ष से अधिक, केवल ५० लाभार्थीयों को, प्रथम आगत प्रथम स्वागत ।

उपचार -

- अस्थमा, सर्दी-जुकाम, ब्रॉन्कायटिस्, एसिडिटी, अल्सर, गैस, कॉन्स्टिपेशन
- जोड़ों का दर्द, कमर दर्द, साइटिका, ऑर्थराईटीज्
- एक्झीमा, त्वचा रोग, ब्लड प्रेशर, हाईपरटेन्शन, अनिद्रा
- डाईबिटीज, मोटापा, डिप्रेशन.

: पंजीकरण हेतु :

Anand Kendra, Gwalior

State Bank of Patiala, Gwalior

A/c. No. 65001335625

IFS Code : STBP0000585